PK टाइम्स

दैनिक
जनता की आवाज...
लोक टुडे
विश्वसनीय खबरों का सर्वश्रेष्ठ अखबार

pktimesnews.com
loktodaynews.com
PK Times News
thepktimesofficial
pk_timesofficial

वर्ष: 12 | अंक: 324 | मूल्य: 1.00 रुपए | पृष्ठ: 4 | मंगलवार 09 जून 2026 | RNI No. RAJHIN/2013/50649

अब रेंगकर नहीं चलेगा जगतपुरा-मालवीय नगर का ट्रैफिक ...

ऑपरेशन 80 फीट में 125 से अधिक अतिक्रमण ध्वस्त

3000 जवानों की सुरक्षा, इंटरनेट-बिजली बंदी के बीच जेडीए ने 5 धार्मिक स्थलों सहित अवैध निर्माण हटाकर सड़क को 80 फीट चौड़ा किया

- **सुबह 5 बजे शुरू हुआ मेगा ऑपरेशन:** आरएसी और पुलिस बल के साथ पूरे इलाके की घेराबंदी
- **5 धार्मिक ढांचे और 125 से अधिक अतिक्रमण हटाए:** बुलडोजर और पोकलेन मशीनों से हुई कार्रवाई
- **इंटरनेट बंद, बिजली गुल, इलाका बना छावनी:** अफवाहों पर रोक के लिए प्रशासन की सख्ती

लोक टुडे। जयपुर

रविवार रात 12 बजे इंटरनेट बंद..., एकाएक सुबह पर टीकी निगाहें..., उसी के अनुरुप सुबह के 5 बजते ही आरएसी और पुलिस के 3000 जवानों के साथ जेडीए अपनी भारी मशीनरी लेकर पूरे नंदपुरी और जगतपुरा इलाके को सील कर घेराबंदी की। बिजली और नेटबंधी के कारण भारी भीड़ का लवाजमा। फिर शुरू हुआ ऑपरेशन 80 फीट ! सुबह 6 बजे जेडीए का दस्ता बुलडोजर और क्रेन के साथ आगे बढ़ा। सबसे पहले नूरानी मस्जिद के अवैध हिस्से को ढहाने की कार्रवाई की गईं। सुबह 8 बजे मस्जिद के बाद सड़क के बीच आ रहे दो मंदिर, मजार और सत्संग भवन को हटाने का काम भारी सुरक्षा के बीच शुरू हुआ। दोपहर 12:30 बजे तक बिना किसी विरोध के सभी 5 धार्मिक ढांचे और मलबे को पूरी तरह साफ कर सड़क को 80 फीट चौड़ा कर दिया गया। फिर एक-एक करके करीब सवा सौ से ज्यादा अतिक्रमण जमींदोज कर दिए गए और जगतपुरा-मालवीय नगर में दशकों पुराना अतिक्रमण देखते ही देखते तितर-बितर कर दिया गया। दुपहर 02 बजे तक स्थिति सामान्य होने पर इलाके की बिजली को चरणबद्ध तरीके से बहाल करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गईं। कहते है ना, तरक्की का रास्ता किसी मजहब का मोहताज नहीं होता। विकास की राह में जब आम जनता की सहूलियत की बात आती है, तो कानून की नजर में मंदिर और मस्जिद का भेद मिट जाता है। जयपुर का 'ऑपरेशन 80 फीट' इस बात का साक्षात गवाह बना है कि जब शहर को जाम से मुक्ति दिलानी हो, तो आस्था का सम्मान करते हुए भी सार्वजनिक हित को हमेशा सर्वोपरि रखना पड़ता है। अतिक्रमण की जद में आए धार्मिक स्थलों को हटाना कभी भी आसान नहीं होता, लेकिन जयपुर प्रशासन और आम जनता ने मिलकर यह साबित किया कि शहर का भविष्य और लाखों लोगों का सुगम सफर किसी भी राजनीतिक या धार्मिक गतिरोध से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। यह प्रशासनिक दृढ़ता और सामाजिक परिपक्वता का एक ऐसा उदाहरण है, जो आने वाले समय में शहरी विकास के लिए एक बड़ी नजीर बनेगा।

बुलडोजर और पोकलेन मशीनों से ध्वस्त -

जयपुर विकास प्राधिकरण ने जगतपुरा-मालवीय नगर इलाके में दशकों पुराने ट्रैफिक जाम को खत्म करने के लिए 'ऑपरेशन 80 फीट' के तहत 5 धार्मिक स्थलों सहित 125 से ज्यादा अवैध निर्माणों को ढहा दिया। 3000 से अधिक पुलिस जवानों की तैनाती और ड्रोन निगरानी के बीच 25 फीट सिमट चुकी सड़क को वापस 80 फीट चौड़ा करने की यह अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई है। जेडीए की टीम ने भारी सुरक्षा बंदोबस्त के बीच सड़क सीमा में आ रहे 5 धार्मिक स्थलों (मस्जिद, मंदिर, मज़ार और सत्संग हॉल) सहित करीब 125 से अधिक अवैध निर्माणों को बुलडोजर और पोकलेन मशीनों की मदद से ध्वस्त किया। इलाके में किसी भी प्रकार के तनाव और कानून-व्यवस्था की स्थिति को बिगड़ने से रोकने के लिए जयपुर पुलिस आयुक्तालय के कई थाना क्षेत्रों में 24 घंटे के लिए इंटरनेट सेवाएं पूरी तरह बंद कर दी गई हैं।

ड्रोन और दूरबीन से निगरानी: हर गतिविधि पर प्रशासन की पैनी नजर

अफवाहों को रोकने के लिए इंटरनेट पर पाबंदी -

जयपुर संभागीय आयुक्त वी. सरवन कुमार के आदेशानुसार सोशल मीडिया के जरिए भ्रामक जानकारियां और धार्मिक उन्माद फैलाने की कोशिशों को नाकाम करने के लिए रविवार रात 12 बजे से सोमवार रात 12 बजे तक 2G, 3G, 4G और 5G मोबाइल इंटरनेट, बल्क SMS और व्हाट्सएप, फेसबुक, एक्स (ट्विटर) जैसी सेवाएं निलंबित की गई हैं। हालांकि, इस दौरान वॉयस कॉलिंग और ब्रॉडबैंड/वाई-फाई सेवाएं सामान्य रूप से काम कर रही थी।

क्यों पड़ी इस कार्रवाई की जरूरत?

JDA अधिकारियों के अनुसार जगतपुरा रेलवे लाइन के समानांतर नंदपुरी अंडरपास की तरफ जाने वाली यह महत्वपूर्ण सेक्टर रोड राजस्व रिकॉर्ड में 80 फीट चौड़ी स्वीकृत है। बीते कुछ दशकों में हुए अवैध अतिक्रमणों के कारण यह सड़क सिमटकर मात्र 25 से 30 फीट की रह गई थी, जिससे रोजाना भारी ट्रैफिक जाम की समस्या बनी रहती थी। इस मार्ग के चौड़ा होने से मालवीय नगर, सांगानेर और जयपुर एयरपोर्ट कनेक्टिविटी को बड़ा फायदा मिलेगा, जिससे करीब 50 कॉलोनियों के निवासियों को राहत मिलेगी।

50 से ज्यादा कॉलोनी के लोगों को फायदा

यह सड़क कई स्थानों पर केवल 25 से 30 फीट चौड़ी रह गई थी, जबकि राजस्व रिकॉर्ड में इसकी चौड़ाई 80 फीट दर्ज है। करीब डेढ़ किलोमीटर लंबा यह मार्ग नंदपुरी अंडरपास को जगतपुरा से जोड़ता है। छह प्रमुख कॉलोनियों के बीच से होकर गुजरता है। प्रशासन का दावा है कि सड़क चौड़ी होने के बाद हरे कृष्णा मार्ग पर ट्रैफिक का दबाव कम होगा। नंदपुरी से जगतपुरा तक बेहतर कनेक्टिविटी मिलेगी। 50 से ज्यादा कॉलोनियों के निवासियों को मालवीय नगर, प्रधान मार्ग और अपेक्स सर्किल क्षेत्र तक पहुंचने में सुविधा होगी।

घटनास्थल से रिपोर्टर प्रमोद कुमार की आंखों देखीं...बुलडोजर चला तो थम गईं जिंदगी, इंटरनेट न बिजली, घरों में कैद रहे लोग !

मालवीय नगर और जगतपुरा क्षेत्र में सोमवार को चले अतिक्रमण हटाओ अभियान ने सिर्फ अवैध निर्माणों को ही नहीं हटाया, बल्कि कुछ घंटों के लिए पूरे इलाके की सामान्य जिंदगी को भी थाम कर रख दिया। रात में इंटरनेट सेवाएं बंद तो सुबह होते ही बिजली गुल हो गई। कार्यवाही के दौरान लोगों की आवाजाही पर भी रोक लगा दी गई। ऐसे में हजारों लोग अपने ही घरों में कैद होकर रह गए। सुबह करीब साढ़े पांच बजे बिजली कटने के बाद लोगों की परेशानी बढ़ने लगी। बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई ठप हो गई, घरों में लगे वाई-फाई राउटर बेकार हो गए और मोबाइल नेटवर्क तो रात को ही जवाब दे दिया था। इंटरनेट बंद होने के कारण कई लोग बैंकिंग, ऑनलाइन भुगतान और जरूरी कामकाज नहीं कर सके। इलाके में रहने वाले लोगों का कहना था कि अचानक बिजली और इंटरनेट बंद होने से उन्हें समझ ही नहीं आया कि आखिर हो क्या रहा है। कुछ परिवारों के बुजुर्ग और बीमार सदस्य भी परेशान रहे क्योंकि वे फोन के जरिए अपने रिश्तेदारों और चिकित्सकों से संपर्क नहीं कर पा रहे थे। पूरे इलाके में पुलिस का कड़ा पहरा था। आम लोगों की आवाजाही रोक दी गई थी और कई स्थानों पर बैरिकेडिंग कर दी गई थी। छतों पर पुलिस बल तैनात था, जबकि ड्रोन कैमरों से निगरानी की जा रही थी। लोगों को घरों से बाहर निकलने की अनुमति नहीं थी, जिससे दिनभर असमंजस और बेचैनी का माहौल बना रहा। बिना नेटवर्क के ओला, उबर और रेपिडो सेवाएं नहीं मिलने से भी परेशानी हुई, क्योंकि बिना नेट के बुकिंग नहीं हो पा रही थी। बुलडोजर की आवाजें तो शाम तक थम गईं, लेकिन उस दिन का अनुभव इलाके के लोगों को लंबे समय तक याद रहेगा। जब कुछ घंटों के लिए पूरा क्षेत्र डिजिटल और सामाजिक रूप से दुनिया से कट गया। लेकिन देर शाम तक स्थिति सामान्य हो गई।

छावनी में बदला इलाका, 3 हजार से अधिक जवान तैनात

कार्रवाई के दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। पुलिस कमिश्नरेट और राजस्थान आर्म्ड कांस्टेबुलरी की 12 कंपनियों सहित करीब 3000 से अधिक पुलिस जवानों को तैनात किया गया है। पूरे इलाके को थ्री-लेयर बैरिकेडिंग से सील कर दिया गया है और बाहरी लोगों के प्रवेश पर पूरी तरह रोक लगा दी गई है।

ड्रोन से निगरानी, दूरबीन से नजर -

ऊंचे स्थानों से दूरबीन की मदद से पूरे इलाके की निगरानी की गई। सुरक्षा एजेंसियों ने संवेदनशील स्थानों और प्रमुख मार्गों पर विशेष नजर रखी। गतिविधियों पर पैनी नजर रही, ताकि किसी भी संदिग्ध हरकत की तुरंत जानकारी मिल सके और आवश्यक कार्रवाई समय पर की जा सके। इलाके में ड्रोन कैमरों के जरिए आसमान से निगरानी की गई। ड्रोन ने भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों, प्रमुख चौराहों और संवेदनशील स्थानों की तस्वीरें और वीडियो जुटाए. इससे प्रशासन को जमीनी हालात का व्यापक आकलन करने में मदद मिली और सुरक्षा व्यवस्था को अधिक प्रभावी ढंग से संचालित किया गया।

8 घंटे घरों में कैद रहे लोग -

सुरक्षा कारणों और प्रशासनिक प्रतिबंधों के चलते लोग करीब आठ घंटे तक घरों में ही कैद रहे. जरूरी कामकाज प्रभावित हुआ और सड़कों पर आवाजाही लगभग थम गई। बच्चों, बुजुर्गों और महिलाओं को भी बाहर निकलने से बचना पड़ा। हालात सामान्य होने के बाद ही लोगों ने राहत महसूस की. बालकनी में भी लोग बाहर नहीं निकले क्योंकि सुरक्षा और वीडियो बनाकर वायरल कर माहौल क्रिएट न हो।

ग्राउंड जीरो से लाइव टाइमलाइन

रात 12:00 बजे (रविवार): जयपुर के कई इलाकों में मोबाइल इंटरनेट और सोशल मीडिया सेवाएं पूरी तरह बंद की गईं।

सुबह 05:00 बजे: आरएसी और पुलिस के 3000 जवानों ने पूरे नंदपुरी और जगतपुरा इलाके को सील कर घेराबंदी की।

सुबह 05:30 बजे: भारी मशीनों (पोकलेन और जेसीबी) के संचालन और सुरक्षा के मद्देनजर पूरे इलाके की बिजली काटी गई।

सुबह 06:00 बजे: जेडीए का दस्ता बुलडोजर और क्रेन के साथ मौके पर पहुंचा। सबसे पहले नूरानी मस्जिद के अवैध हिस्से को ढहाने की कार्रवाई शुरू हुई।

सुबह 08:30 बजे: मस्जिद के बाद सड़क के बीच आ रहे दो मंदिरों, मजार और सत्संग भवन को हटाने का काम भारी सुरक्षा के बीच शुरू हुआ।

दुपहर 12:30 बजे: बिना किसी विरोध के सभी 5 धार्मिक ढांचे और मलबे को पूरी तरह साफ कर सड़क को 80 फीट चौड़ा कर दिया गया।

दुपहर 02:00 बजे: स्थिति सामान्य होने पर इलाके की बिजली को चरणबद्ध तरीके से बहाल करने की प्रक्रिया शुरू हुई।

संपादकीय: तरक्की का कोई मजहब नहीं

पी के बृजवाल

किसी भी जीवंत और आधुनिक शहर की पहचान इस बात से होती है कि वह अपने भविष्य के निर्माण के लिए कितना परिपक्व कदम उठा सकता है। जयपुर के जगतपुरा-मालवीय नगर इलाके में हुआ 'ऑपरेशन 80 फीट' केवल अतिक्रमण हटाने की एक प्रशासनिक कवायद भर नहीं है, बल्कि यह बदलते भारत की उस नई सोच का प्रतीक है जहां जनहित को सर्वोपरि माना गया है। कानून की चौखट पर जब आम जनता की सहूलियत और दैनिक जीवन को सुगम बनाने का सवाल खड़ा हुआ, तो दशकों पुराने गतिरोध पल भर में ढह गए। इस कार्रवाई ने साफ संदेश दिया है कि तरक्की की राह में जब सामूहिक कल्याण की बात आती है, तो आस्था की दीवारें कभी रुकावट नहीं बनतीं, बल्कि वे खुद रास्ता छोड़ देती हैं।

धार्मिक स्थल चाहे मंदिर हो या मस्जिद, वे समाज को जोड़ने और शांति का मार्ग दिखाने के लिए होते हैं, न कि राहगीरों के सफर में बाधा बनने के लिए। पिछले कई दशकों से महज 25 से 30 फीट में सिमट चुकी इस मुख्य सेक्टर रोड पर रोजाना हजारों लोग ट्रैफिक जाम और मानसिक तनाव से जूझते थे। जयपुर विकास प्राधिकरण और पुलिस प्रशासन की इस संयुक्त और निष्पक्ष कार्रवाई ने यह साबित कर दिया कि जब नीति साफ और नीयत निष्पक्ष हो, तो बड़े से बड़े संवेदनशील मामलों को भी शांतिपूर्वक सुलझाया जा सकता है। बिना किसी भेदभाव के पांचों धार्मिक स्थलों और 125 से अधिक अवैध निर्माणों पर एक साथ कार्रवाई करना प्रशासनिक दृढ़ता की एक बेहतरीन नजीर है। इस पूरे घटनाक्रम का सबसे खूबसूरत पहलू जयपुर की जनता और धार्मिक प्रबंधकों द्वारा दिखाई गई सामाजिक परिपक्वता रही। किसी भी प्रकार के राजनीतिक या सांप्रदायिक गतिरोध को हवा देने के बजाय, समाज ने यह स्वीकार किया कि शहर का सुगम भविष्य किसी भी संकीर्ण सोच से कहीं अधिक बड़ा है। इंटरनेट बंद करना और हजारों जवानों की तैनाती भले ही एहतियाती सुरक्षा कदम थे, लेकिन असल जीत उस समझदारी की हुई जिसने कानून का सम्मान किया। 'ऑपरेशन 80 फीट' शहरी नियोजन के इतिहास में हमेशा याद रखा जाएगा, इसलिए नहीं कि यहाँ बुलडोजर चला, बल्कि इसलिए क्योंकि यहाँ विकास की सामूहिक चेतना ने जन्म लिया है।

सम्पादकीय

आर्थिक सुधारों को गति मिले

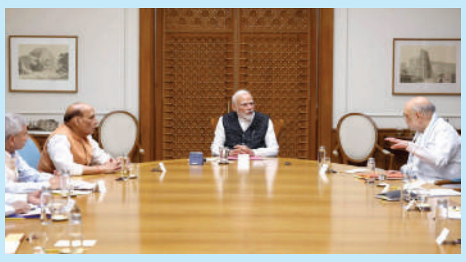

प्रधानमंत्री ने अपनी आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्यों के साथ बैठक कर मौजूदा आर्थिक समस्याओं से निपटने पर जो मंथन किया, वह समय की मांग था। विश्व स्तर पर जारी उथल-पुथल और विशेष रूप से पश्चिम एशिया संकट ने अन्य देशों के साथ-साथ भारत की अर्थव्यवस्था के सामने भी चुनौतियां खड़ी कर दी हैं।

सबसे बड़ी चुनौती खाड़ी के देशों से तेल एवं गैस की आपूर्ति में बाधा के कारण खड़ी हुई है। अमेरिका और ईरान के बीच युद्धविराम के बावजूद हालात सामान्य होने के कोई आसार नहीं दिखते। हालात तब तक सामान्य होने वाले नहीं हैं, जब तक होर्मुज समुद्री मार्ग बाधित रहता है। अमेरिका तमाम प्रयत्नों के बावजूद ईरान पर ऐसा दबाव नहीं डाल पा रहा है, जिससे यह जलमार्ग जहाजों के सुरक्षित आवागमन के लिए खुल सके।

चूंकि युद्धविराम के बाद भी अमेरिका और ईरान एक-दूसरे के ठिकानों को निशाना बनाते रहते हैं, इसलिए तेल एवं गैस के दाम कम होने का नाम नहीं ले रहे हैं। यह ठीक है कि पश्चिम एशिया संकट ने अर्थव्यवस्था के समक्ष जो कठिनाइयां पैदा की हैं, उन्हें दूर करने के लिए अनेक उपाय किए गए हैं, लेकिन अभी उन्हें पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। ऊर्जा संसाधनों की बचत और मितव्ययिता बरतने के सुझावों पर कितना भी अमल हो, वह एक हद तक ही प्रभावी हो सकता है।

इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि डॉलर के मुकाबले रुपया कमजोर होने से भारत का आयात बिल बढ़ रहा है और उधर अमेरिका के साथ होने वाले व्यापार समझौते के संपन्न होने की कोई सूरत नहीं दिख रही है। अच्छी बात यह है कि देश के विशालकाय मध्य वर्ग की क्रय क्षमता के चलते वैसा कोई गंभीर आर्थिक संकट खड़ा होता नहीं दिख रहा है, जैसा कुछ विपक्षी नेता बता रहे हैं, लेकिन यदि पश्चिम एशिया संकट लंबा खिंचा तो समस्याएं और अधिक बढ़ सकती हैं। इससे कारोबार जगत के साथ आम लोग भी प्रभावित होंगे।

इन स्थितियों में यह आवश्यक है कि सभी वांछित आर्थिक सुधारों की दिशा में तेजी के साथ आगे बढ़ा जाए। यह समझा जाए कि कारोबारी सुगमता को वास्तव में और बेहतर बनाने की आवश्यकता है, क्योंकि हमारे प्रमुख उद्योगपति देश में उतना निवेश नहीं कर रहे हैं, जितना उन्हें करना चाहिए। इसी के साथ सरकार को यह भी देखना होगा कि विदेशी निवेशक पर्याप्त मात्रा में पूंजी का निवेश क्यों नहीं कर रहे हैं?

बीते दिनों उन्हें आकर्षित करने के लिए कुछ कदम अवश्य उठाए गए हैं, लेकिन यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि उनके सकारात्मक परिणाम भी सामने आएं। भारत को इस पर विशेष ध्यान देना होगा कि आवश्यक वस्तुओं के आयात पर निर्भरता कम हो और निर्यात बढ़े। निःसंदेह यह तभी संभव होगा, जब सरकार और उद्योग जगत चुनौतियों का सामना मिलकर करेंगे।

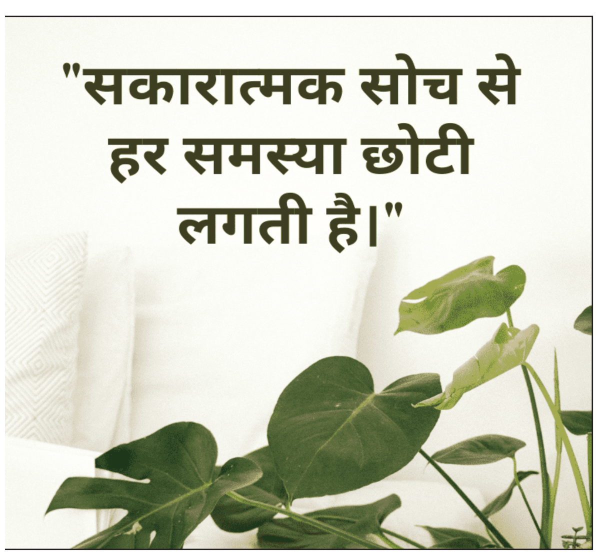

कब थमेगा सपनों का यह कत्ल...? सरकारी व्यवस्था से हार रहे हैं बच्चे

केंद्रीय परीक्षा नीट-यूजी 2026 का प्रश्नपत्र लीक होने के बाद यह पीड़ादायक है कि देश के किसी न किसी हिस्से से अब भी बच्चों के जीवन से हारने की खबरें आनी जारी हैं। हमारे देश में प्रतियोगी परीक्षाएं जीवन संवारने की एक उम्मीद होती हैं। आशाओं का एक ऐसा द्वार, जिसे पार कर अच्छा भविष्य बनाने के लिए हर वर्ष लाखों बच्चे और उनके स्वजन तपस्या की तरह तैयारी में जुट जाते हैं।

यही वजह है कि इन इम्तिहानों का निरस्त होना सीधे-सीधे उनके सपनों पर कुठाराघात होता है। इन घटनाओं के कारण वर्षों की श्रमशील दिनचर्या व्यवस्था की लचरता की भेंट चढ़ जाती है, जिसके चलते बच्चे भावी जीवन से जुड़ी अनिश्चितता, मानसिक अवसाद और सपनों के बिखरने की पीड़ा से जूझते हैं।

कुछ समय पहले नीट परीक्षा को प्रश्नपत्र लीक की चर्चा के बीच रद्द किया गया। अब इसकी जांच सीबीआई कर रही है। तकलीफदेह है कि प्रश्नपत्र लीक होने के अधिकतर मामले जांच-पड़ताल तक ही सिमट कर रह जाते हैं। जबकि ऐसी घटनाएं पहले से ही गलाकाट प्रतियोगिता के दौर में भविष्य बनाने के लिए जद्दोजहद कर रहे बच्चों के श्रम और उनकी प्रतिबद्धता पर पानी फेर देती हैं।

इस बार भी एनटीए के इस फैसले के बाद करीब बाईस लाख से ज्यादा विद्यार्थियों को दोबारा परीक्षा देनी होगी। कई बच्चों की आत्महत्या की खबरों के बीच बहुत से बच्चों द्वारा आक्रोश जताने वाले विरोध प्रदर्शन भी हुए। अभिभावकों ने भी बच्चों की पढ़ाई से जुड़े संघर्ष और हालात का हवाला दिया। स्पष्ट है कि पूरे समाज को निराशा और अविश्वास की ओर धकेलने वाले ऐसे वाकये चिंतनीय हैं और हमारी अकादमिक व्यवस्था से भरोसा कम करने वाले हैं।

असल में प्रश्नपत्र लीक होने की घटनाओं को केवल अभ्यर्थियों की समस्या के तौर पर नहीं देखा जा सकता। व्यवस्थागत मोर्चे पर बड़ी खामी को उजागर करने वाली ये घटनाएं अभ्यर्थी के पूरे परिवार को आघात पहुंचाती हैं। देश के आम परिवार के लिए ये मानसिक, आर्थिक और भावनात्मक मोर्चे पर पीड़ादायी होती हैं। निराश होकर बच्चों के जीवन से मुंह मोड़ लेने वाले मामलों की तो कोई क्षतिपूर्ति ही नहीं हो सकती। दुखद है कि नीट परीक्षा निरस्त होने के बाद ऐसे कई दुर्भाग्यपूर्ण मामले भी सामने आए।

राजस्थान के झुंझुनूं जिले में नीट की तैयारी कर रहे बाईस वर्षीय छात्र ने परीक्षा रद्द होने और पेपर लीक विवाद से आहत होकर अपनी जान दे दी। अभ्यर्थी के पिता के मुताबिक, बहुत अच्छा पेपर होने और अच्छे अंक आने की उम्मीद को लगी ठेस के चलते उसने ऐसा कदम उठाया। उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में जीवन से हार मान लेने वाले इक्कीस वर्षीय छात्र के परिवार का कहना है कि वह अपने तीसरे प्रयास में डॉक्टर बनने को लेकर पूरी तरह आश्वस्त था, लेकिन परीक्षा खारिज होने के समाचार ने उसका मनोबल तोड़ दिया। दिल्ली के आजादपुर में आत्महत्या करने वाली बीस वर्षीय छात्रा के परिजनों ने बताया कि परीक्षा रद्द होने के बाद वह मानसिक अवसाद में चली गई थी।

समझना कठिन नहीं है कि यह संसाधनों का ही नहीं, अनमोल मानवीय जीवन का भी नुकसान है। कितने ही बच्चों और उनके स्वजनों के सपने अनिश्चितता के घेरे में आ जाते हैं। नीट यूजी-2026 निरस्त होने से देशभर में अभ्यर्थी प्रभावित हुए हैं। यह स्थिति लाखों युवाओं और उनके परिवारों के संघर्षों पर आघात करने वाली है। कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले कई बच्चे अनगिनत मुश्किलों से जूझकर ऐसी प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी करते हैं।

अधिकतर प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की शुल्क राशि आम परिवारों के लिए बड़ा बोझ होती है। दूरदराज के इलाकों से आने वाले गरीब घरों में तो अभिभावकों को बच्चों के घर से दूर रहने और कोचिंग के खर्च के लिए कर्ज तक लेना पड़ जाता है। मध्यवर्गीय परिवार हर मोर्चे पर जूझकर अपने बच्चों के सपनों को साकार करने का अवसर देते हैं। कम से कम संसाधनों में तैयारी करने वाले बहुत से बच्चों के पास सही समय पर पौष्टिक भोजन लेने और पर्याप्त आराम करने की व्यवस्था भी नहीं होती। कितने ही बच्चे शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य समस्याओं के दुश्चक्र में फंस जाते हैं। इसी वजह से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के दौरान भी बच्चों की आत्महत्या के मामले सामने आते रहते हैं।

इसके अलावा, पेपर लीक के कारण फिर से परीक्षा होने की स्थिति में अभ्यर्थियों को दोबारा तैयारी के लिए मानसिक दबाव से गुजरना पड़ता है। परिवारों को अतिरिक्त आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। बच्चों की पढ़ाई के लिए कई परिवारों में गहने और जमीन तक बिक जाती है। गांवों-कस्बों से बार-बार परीक्षा देने आने के लिए भी खर्च करना पड़ता है। यही वजह है कि इन वाकयों के कारण मेहनत के बल पर अपने सपने पूरे करने का मार्ग चुनने वाले योग्य उम्मीदवार और उनके अपने ठगा-सा महसूस करते हैं। इस स्थिति में किसी एक परिवार में ही नहीं, पूरे समाज में निराशा फैलती है। ऐसे में परीक्षा लेने के तरीके में बदलाव और व्यवस्थागत सख्ती जरूरी है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश में प्रश्नपत्र लीक को लेकर सख्त कानून होने के बावजूद परीक्षाओं की निष्पक्षता, गोपनीयता और पारदर्शिता सवालों के घेरे में है। बच्चों को हताशा ही नहीं, जान देने वाले हालात तक ले जाने वाली घटनाएं रुक नहीं पा रही हैं। जबकि प्रश्नपत्र लीक, नकल गिरोह और परीक्षाओं में धांधली पर लगाम लगाने के लिए केंद्र सरकार द्वारा 2024 में कठोर कानून भी बनाया गया था। 'सार्वजनिक परीक्षा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम' में दोषियों के लिए दस वर्ष तक की जेल और भारी जुर्माने का प्रावधान है। ऐसे में सरकार और एनटीए को ऐसे प्रयास करने होंगे कि इन कानूनों का असर भी दिखाई दे। अभ्यर्थियों को मायूसी की ओर धकेलने वालों पर त्वरित कार्रवाई हो। पारदर्शी जांच और दोषियों को सख्त सजा सुनिश्चित किए बिना विद्यार्थियों का विश्वास नहीं जीता जा सकता।

पाकिस्तान के बाद अब बांग्लादेश से रक्षा संबंध बना रहा तुर्किये, भारत को दो तरफ से घेरने की रणनीति!

दक्षिण एशिया की बदलती भू राजनीतिक बिसात पर अब एक नया और बेहद खतरनाक समीकरण तेजी से उभर रहा है। भारत विरोधी रवैये के लिए लंबे समय से चर्चित तुर्किये अब केवल पाकिस्तान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने बांग्लादेश के साथ भी अपने रक्षा और सामरिक रिश्तों को तेजी से विस्तार देना शुरू कर दिया है। ढाका पहुंचे तुर्किये के विदेश मंत्री हाकान फिदान ने जिस तरह बांग्लादेश को दक्षिण एशिया की सुरक्षा संरचना का महत्वपूर्ण स्तंभ बताया, उसने नई दिल्ली की चिंता और गहरा दी है। इस बयान को भारत के चारों ओर रणनीतिक दबाव बनाने की सुनियोजित चाल के रूप में देखा जा रहा है।

तुर्किये ने साफ संकेत दे दिया है कि वह दक्षिण एशिया में अपनी मौजूदगी केवल व्यापार या मानवीय सहायता तक सीमित नहीं रखना चाहता। ढाका में हुई उच्च स्तरीय वार्ता में रक्षा सहयोग, रक्षा उत्पादन, सामरिक साझेदारी और आर्थिक विस्तार पर जिस गंभीरता से चर्चा हुई, वह भारत के लिए साधारण घटना नहीं है। बांग्लादेश ने तुर्किये को रक्षा सामग्री निर्माण में निवेश का खुला न्योता दिया है। दोनों देशों ने पारंपरिक सहयोग से आगे बढ़कर रणनीतिक साझेदारी की दिशा में कदम बढ़ाने की बात कही है। यह वही तुर्किये है जिसने पाकिस्तान के साथ मिलकर वर्षों तक भारत विरोधी मोर्चेबंदी की, कश्मीर मुद्दे पर खुलकर इस्लामाबाद का साथ दिया और इस्लामी सहयोग संगठन के मंचों पर भारत के खिलाफ माहौल बनाने का प्रयास किया।

उधर, दिल्ली की सबसे बड़ी चिंता यह है कि तुर्किये अब भारत के पश्चिमी मोर्चे पर पाकिस्तान और पूर्वी मोर्चे पर बांग्लादेश के साथ समानांतर सामरिक रिश्ते बना रहा है। यह दो तरफा दबाव की रणनीति जैसी दिखाई देती है। पाकिस्तान पहले से ही तुर्किये के रक्षा उद्योग, ड्रोन तकनीक और सैन्य प्रशिक्षण का लाभ उठा रहा है। अब यदि वही ढांचा बांग्लादेश तक पहुंचता है, तो भारत के लिए सुरक्षा समीकरण और जटिल हो जाएंगे। खास तौर पर तब, जब बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के बाद नई सरकार अपनी विदेश नीति को नए ढंग से गढ़ने की कोशिश कर रही है।

इसके अलावा, तुर्किये और बांग्लादेश के बीच केवल रक्षा सहयोग ही नहीं, बल्कि आर्थिक और संस्थागत साझेदारी भी तेजी से बढ़ रही है। दोनों देश व्यापार को तेरह अरब डॉलर से बढ़ाकर बीस अरब डॉलर तक ले जाने की तैयारी में हैं। विशेष आर्थिक क्षेत्रों में तुर्किये को निवेश का निमंत्रण दिया गया है। वस्त्र, दवा निर्माण, जहाज निर्माण और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाया जा रहा है। ढाका में अंतरराष्ट्रीय स्तर का अस्पताल और नर्सिंग संस्थान स्थापित करने का प्रस्ताव भी दिया गया है। यह साफ दिखाता है कि तुर्किये केवल सैन्य साझेदारी नहीं, बल्कि दीर्घकालिक प्रभाव स्थापित करने की नीति पर काम कर रहा है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि तुर्किये दक्षिण एशिया में खुद को मुस्लिम दुनिया के प्रभावशाली संरक्षक के रूप में स्थापित करना चाहता है। रोहिंग्या मुद्दे पर उसकी सक्रियता, गाजा पर आक्रामक बयानबाजी और बांग्लादेश के साथ मानवीय सहयोग इसी रणनीति का हिस्सा हैं। लेकिन इसके पीछे छिपा बड़ा उद्देश्य क्षेत्रीय प्रभाव विस्तार और भारत की सामरिक चुनौती को बढ़ाना है।

वैसे तो तुर्किये लगातार यह कह रहा है कि भारत को उसके पाकिस्तान से रिश्तों की वजह से उससे दूरी नहीं बनानी चाहिए। लेकिन असली सवाल भरोसे का है। राष्ट्रपति एर्दोआन कई बार खुलकर कश्मीर पर पाकिस्तान के समर्थन में बयान दे चुके हैं। तुर्किये ने पाकिस्तान के साथ अपने रक्षा रिश्ते भी काफी मजबूत कर लिए हैं। इतना ही नहीं, पिछले साल भारत और पाकिस्तान के बीच सैन्य संघर्ष के दौरान तुर्किये ने

पाकिस्तान को रक्षा उपकरण और ड्रोन तक मुहैया कराए थे। भारत ने पाकिस्तान की तरफ से आए जिन कई ड्रोनों को मार गिराया था, उनमें तुर्किये में बने ड्रोन भी शामिल थे। ऐसे में तुर्किये का भारत से दोस्ती और संतुलन की बात करना नई दिल्ली को एक सोची समझी रणनीतिक चाल जैसा लगता है। यही वजह है कि भारत भी अब तुर्किये को उसी की भाषा में जवाब दे रहा है।

दरअसल, भारत ने हाल के वर्षों में साइप्रस और ऑर्मेनिया के साथ अपने रक्षा संबंधों को तेजी से मजबूत किया है। ऑर्मेनिया अब भारतीय हथियारों का बड़ा खरीदार बन चुका है। साइप्रस के साथ भी भारत रणनीतिक और रक्षा सहयोग बढ़ा रहा है। यह सीधे-सीधे तुर्किये को संदेश है कि यदि अंकारा भारत के पड़ोस में दखल बढ़ाएगा, तो नई दिल्ली भी तुर्किये के सामरिक क्षेत्र में जवाबी दबाव बनाएगी। जिस तरह तुर्किये पाकिस्तान और अब बांग्लादेश के जरिए भारत को घेरने की कोशिश कर रहा है, उसी तरह भारत भी तुर्किये के विरोधी या प्रतिस्पर्धी देशों के साथ संबंध मजबूत कर रहा है। यह नई शीत प्रतिद्वंद्विता का संकेत है।

उधर, बांग्लादेश के प्रधानमंत्री तारिक रहमान की विदेश नीति भी इस समय भारत के लिए गहरी चिंता का विषय बनती जा रही है। भारत की ओर से सबसे पहले आधिकारिक यात्रा का निमंत्रण मिलने के बावजूद रहमान ने पहले मलेशिया और फिर चीन जाने का फैसला किया। ढाका ने साफ तौर पर यह संदेश देने की कोशिश की कि वह अब केवल भारत पर निर्भर रहने वाली नीति से आगे बढ़ना चाहता है। खास बात यह है कि चीन यात्रा के दौरान तीस्ता परियोजना समेत कई बड़े रणनीतिक मुद्दों पर बातचीत की संभावना जताई जा रही है। साथ ही तारिक रहमान की मलेशिया यात्रा को केवल एक सामान्य विदेश दौरे के तौर पर नहीं देखा जा रहा है। इसके पीछे साफ रणनीतिक सोच दिखाई दे रही है। बांग्लादेश नहीं चाहता था कि नई सरकार की पहली विदेश यात्रा सीधे भारत या चीन में से किसी एक देश की तरफ झुकाव का संकेत दे।

विशेष आलेख /राशिफल

आखिर आर्थिक सुनामी के राजनीतिक व आर्थिक मायने मायने क्या हैं ?

राहुल गांधी की आर्थिक सुनामी वाली चेतावनी को फिलहाल एक राजनीतिक चेतावनी और आर्थिक जोखिमों पर विपक्षी आक्रमण के रूप में देखा जाना चाहिए। क्योंकि उनका यह कहना कि भारत निश्चित रूप से आर्थिक सुनामी की ओर बढ़ रहा है, अभी उपलब्ध तथ्यों के आधार पर जल्दबाजी होगी। हालांकि वैश्विक परिस्थितियों और घरेलू आर्थिक चुनौतियों को देखते हुए इस बहस को पूरी तरह खारिज भी नहीं किया जा सकता।

आर्थिक मामलों के जानकार बताते हैं कि भारत में वास्तव में आर्थिक सुनामी आएगी या नहीं, इसका कोई निश्चित उत्तर अभी नहीं दिया जा सकता। लेकिन विपक्ष के नेता राहुल गांधी द्वारा हाल में दी गई चेतावनी ने आर्थिक और राजनीतिक बहस को तेज कर दिया है। क्योंकि राहुल गांधी का तर्क है कि वैश्विक संकट, विशेषकर पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव, महंगाई, ईंधन कीमतों और आर्थिक असमानता के कारण भारत एक बड़े आर्थिक झटके की ओर बढ़ सकता है। दूसरी ओर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार और भाजपा का कहना है कि भारत की अर्थव्यवस्था के पास पर्याप्त शॉक एब्जॉर्बर हैं—विदेशी मुद्रा भंडार, नियंत्रित महंगाई, खाद्यान्न भंडार, डिजिटल अर्थव्यवस्था और मजबूत कर-संग्रह जैसी व्यवस्थाएं—जो बाहरी संकटों का सामना करने में सक्षम हैं।

भारत के सामने कुछ वास्तविक चुनौतियाँ हैं- जैसे वैश्विक तेल कीमतों में वृद्धि की आशंका। निर्यात और निवेश पर अंतरराष्ट्रीय तनाव का असर। रोजगार सृजन की चुनौती। और कृषि और एमएसएमई क्षेत्र पर दबाव। लेकिन साथ ही भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में बना हुआ है, और कई आर्थिक संकेतक अभी व्यापक संकट की पुष्टि नहीं करते। जानकार बताते हैं कि आर्थिक सुनामी कोई औपचारिक आर्थिक शब्द नहीं है, बल्कि ऐसी स्थिति को बताने के लिए इस्तेमाल किया जाता है जब अर्थव्यवस्था को अचानक और व्यापक झटका लगे तथा उसके प्रभाव दूरगामी हों। इसके कुछ संकेत हो सकते हैं- जीडीपी वृद्धि दर में तेज गिरावट। बड़े पैमाने पर बेरोजगारी। बैंकिंग या वित्तीय संकट। शेयर बाजार में भारी गिरावट। मुद्रा पर दबाव और महंगाई का बढ़ना। निवेश और उपभोग में तीव्र कमी। इतिहास में Great Depression (1930 का दशक) और Global Financial Crisis (2008) जैसी घटनाओं को आर्थिक सुनामी के उदाहरण माना जा सकता है। किसी भी सरकार या प्रधानमंत्री के रहते हुए आर्थिक संकट की संभावना को पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता। अर्थव्यवस्था अनेक घरेलू और वैश्विक कारकों से प्रभावित होती है, जैसे—वैश्विक मंदी या वित्तीय संकट। तेल की कीमतों में असाधारण वृद्धि। बड़े युद्ध या भू-राजनीतिक तनाव। प्राकृतिक आपदाएं या महामारी। घरेलू नीति संबंधी गंभीर त्रुटियां। हालांकि भारत की अर्थव्यवस्था में कुछ ऐसी ताकतें भी हैं जो बड़े झटकों को सहने में मदद करती हैं— जैसे- विशाल घरेलू बाजार। अपेक्षाकृत मजबूत बैंकिंग और नियामक व्यवस्था। बढ़ता डिजिटल भुगतान तंत्र। बुनियादी ढांचे और विनिर्माण पर निवेश। विदेशी मुद्रा भंडार का पर्याप्त स्तर। दूसरी ओर, चुनौतियां भी मौजूद हैं—जैसे- युवाओं के लिए पर्याप्त रोजगार सृजन। कृषि आय में सुधार। निर्यात प्रतिस्पर्धा बढ़ाना। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता। और, आय असमानता और उपभोग मांग का प्रश्न। इसलिए निष्पक्ष रूप से कहा जाए तो पीएम मोदी के रहते आर्थिक सुनामी निश्चित रूप से आएगी या कभी नहीं आएगी— दोनों दावे तथ्यात्मक रूप से सिद्ध नहीं हैं। भारत की आर्थिक स्थिति कई संकेतकों पर अपेक्षाकृत मजबूत दिखती है, लेकिन किसी भी बड़ी अर्थव्यवस्था की तरह यह वैश्विक और घरेलू जोखिमों से पूरी तरह मुक्त नहीं है।

आर्थिक सुनामी की संभावना मुख्यतः नीतियों, वैश्विक परिस्थितियों और भविष्य की घटनाओं पर निर्भर करेगी, न कि केवल किसी एक नेता की उपस्थिति या अनुपस्थिति पर। आर्थिक सुनामी एक रूपक है, जिसका अर्थ है ऐसा व्यापक और तीव्र आर्थिक संकट जो समाज, बाजार, उद्योग, रोजगार और सरकार की वित्तीय स्थिति को एक साथ प्रभावित कर दे। जिस प्रकार समुद्री सुनामी अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को झकझोर देती है, उसी प्रकार आर्थिक सुनामी भी अर्थव्यवस्था के लगभग सभी क्षेत्रों पर गहरा असर डालती है।

क्या कहते है आपके सितारें....?

मेष — आज का दिन आपके लिए सामान्य रहने वाला है। आपका जीवनसाथी आपसे नाराज़ हो सकता है जिसके कारण आपको उसकी कोई ग़लत बात माननी पड़ सकती है।

वृषभ — आज का दिन आपके लिए कुछ खास रहने वाला है। विद्यार्थी परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करेंगे और उनके मन में कोई डर नहीं रहेगा। यदि पैसों से जुड़ी कोई समस्या आपको लंबे समय से परेशान कर रही है तो उसका समाधान मिलेगा।

मिथुन — आज का दिन आपके लिए महत्वपूर्ण रहने वाला है क्योंकि यदि आपके ऊपर कानून में कोई मुकदमा चल रहा है तो आज उसमें आपको विजय प्राप्त होगी।

कर्क — आज का दिन आपके लिए मध्यम फलदायी रहेगा। आपको अपनी कुछ घरेलू जिम्मेदारियों को भी समझना होगा और उन्हें समय पर पूरा करना होगा।

सिंह — आपको कुछ ऐसे माध्यमों से धन लाभ होता दिख रहा है, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं थी। आप अपने किसी पुराने मित्र से मिलकर प्रसन्न होंगे।

कन्या — आज का दिन आपके लिए उत्साह से भरा रहने वाला है। आप अपने हुनर और साझेदारी से किए गए काम में अच्छा पैसा कमाएंगे और लोगों का प्यार भी लूटेंगे।

तुला — आज का दिन आपके लिए परेशानियों भरा रहेगा। आपको किसी भी बात को दिल पर लेने से बचना होगा, अन्यथा आप लोगों से नाराज रहेंगे।

वृश्चिक — आज का दिन आपके साहस और पराक्रम में वृद्धि लाएगा। आज युवाओं को करियर से जुड़ी कोई नई जानकारी मिलेगी और कोई अच्छी नौकरी भी मिल सकती है।

धनु — गणेशजी कहते हैं कि आज का दिन आपके लिए सकारात्मक परिणाम लेकर आएगा। बैंकिंग क्षेत्र से जुड़े लोगों को लाभ मिल सकता है।

मकर — जीवनसाथी के सहयोग से आपको कोई संपत्ति मिल सकती है। ईश्वर की कृपा से आपके बहुत सारे काम बनने की पूरी उम्मीद है, लेकिन यदि परिवार के किसी सदस्य के साथ आपका कोई विवाद चल रहा है तो उसे खत्म करने का प्रयास आपको करना होगा।

कुंभ — आज का दिन आपके लिए अत्यंत लाभदायी रहेगा। परिवार में भाई-बहनों का सहयोग मिलेगा, लेकिन मित्रों से कुछ मतभेद रहेंगे। आप अपने जीवनसाथी के साथ कुछ रोजमर्रा की चीजों की खरीदारी करने भी जा सकते हैं।

मीन — आज का दिन आपके लिए सामान्य लाभ वाला रहेगा। आज आपको किसी खास मामले में जीत मिल सकती है जिसके लिए आप काफी समय से प्रयास कर रहे थे।

स्वच्छ व स्वस्थ भारत के लिए हाथ ठीक से धोना जरूरी

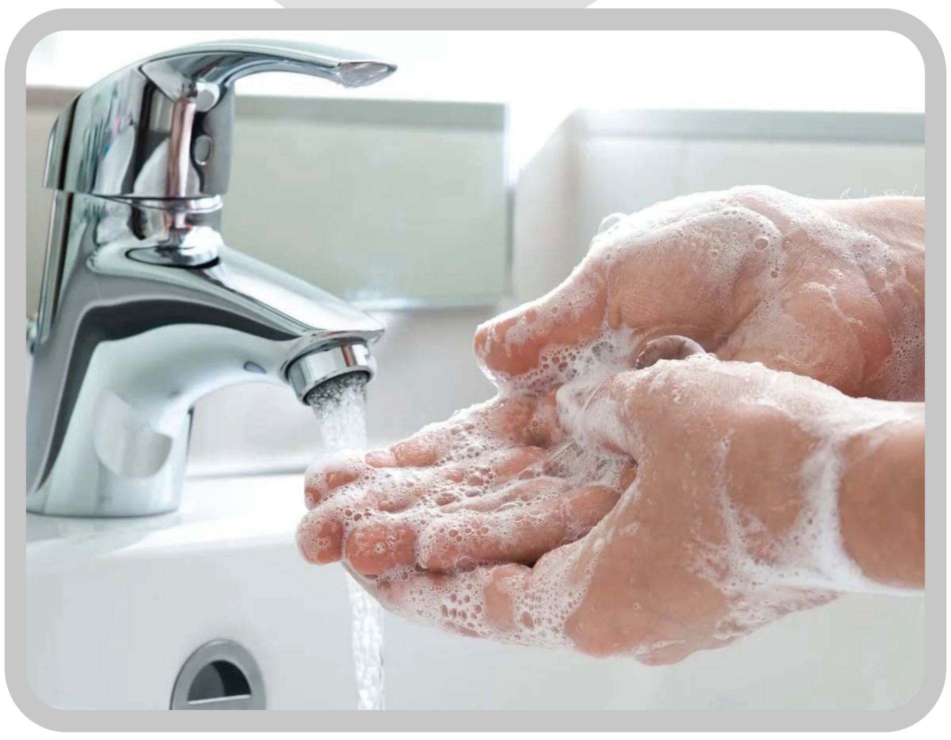

एक बार इस बात पर गौर कीजिए कि दिन भर में आप कितनी चीजें को हाथ लगाते हैं जैसे टेबल, फोन, मोबाइल, परदे, खिड़की, दरवाजे, पेन और चाबियां। घर से लेकर बाहर तक न जाने कितनी चीजों का दिन भर हाथ लगाना पड़ता है, जिन्हें गिनना भी मुश्किल है। ऐसी चीजों पर मौजूद कीटाणु आपके हाथ से होते हुए आपके मुंह द्वारा शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। उन सारे खाने-पीने की चीजों को याद कीजिए, जिन्हें आप हाथ से खाते हैं। इससे कीटाणु सीधे आपके शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।दिन भर हाथ में दस्ताने पहन कर काम करना यों भी मुश्किल होता हैं क्योंकि इन कीटाणुओं से तभी बचा जा सकता है। मगर एक उपाय और भी है, जिससे इन कीटाणुओं से होने वाली बीमारी से आसानी से बचा जा सकता है वह है-हैंडवाश। हैंडवाश यानी हाथ को ठीक से धोना ही इन कीटाणुओं से बचने का एकमात्र उपाय है। मगर एक हकीकत यह भी है कि बच्चे तो छोड़िए बड़े भी ठीक से हाथ धोना नहीं जानते।बीते साल 'हेल्दी हैंड वाश डे' मनाया गया था। तब लगभग पांच लाख बच्चों को ठीक से हाथ धोना सिखाया गया। क्योंकि बच्चे जल्दी बीमार होते हैं। हर साल लगभग 40 लाख से भी ज्यादा बच्चे दस्त के कारण संक्रमण के शिकार हो जाते हैं। जिससे उनके मौत तक हो जाती है। इनमें पांच साल से कम उम्र के बच्चों की संख्या ज्यादा होती है। गंदे हाथों से फैलने वाली बीमारियों में अतिसार इंफ्लुएंजा, जुकाम और आंखों में इंफेक्शन और सांस के रोग सामान्य हैं। गंदे हाथों से छोटे बच्चों में दस्त होने की समस्या सामान्य है। दस्त से हुए संक्रमण से बच्चों की जान भी चली जाती है। हेल्दी हैंड वाश की आदत बच्चों को ऐसी जानलेवा बीमारी से बचाने में मदद करती है। हेल्दी हैंड वाश का तरीका शायद ही लोगों को पता होगा। अक्सर टीवी पर हैंडवाश का विज्ञापन बच्चों को भ्रमित करता हैं। दस सेकेंड में हाथ साफ करने की सलाह वाला विज्ञापन भ्रामक हैं। अच्छी तरह हाथ धोना बचपन से ही सिखाना जरूरी हैं। पर साथ में हैंडवाश के लिए साधारण साबुन और मिट्टी इस्तेमाल करना गलत है। इससे हाथ के कीटाणु मरते नहीं बल्कि और बढ़ जाते हैं साथ ही बीमारी भी फैलती है। हाथ धोने के लिए लिक्विड साबुन का ही प्रयोग करें। अगर आप यह सोचते हैं कि किसी भी बीमारी के लिए एंटीबायोटिक देना सबसे बेहतर तरीका है, तो आपको एक बार फिर से सोचना चाहिए। बीमारी फैलाने वाले कीटाणु से बचने का सबसे बेहतर तरीका है हेल्दी हैंड वाश। यानी अच्छी तरह हाथ धोना। खाने से पहले, शौच के बाद या किसी भी काम के बाद हाथ जरूर धोना चाहिए। अगर आप किसी घाव या चोट को छू रहे हैं, तो अपने हाथ जरूर धोएं। होटल, रेस्टोरेंट, लाइब्रेरी, कम्प्यूटर वगैरह में किसी भी चीज का इस्तेमाल करने से पहले और बाद में हाथ जरूर धोएं। हाथ धोने का मतलब यह नहीं कि सिर्फपानी से धो लें। हाथ धोने के लिए साबुन का इस्तेमाल करें और हाथ को अच्छी तरह रगड़ कर धोएं ताकि धूल-मिट्टी निकल जाएं। हाथ धोने के लिए लिक्विड सोप का इस्तेमाल सबसे बेहतर तरीका है। ढंग से हाथ धोने से करीब 99 फीसद कीटाणु निकल जाते हैं। आज बाजार में कई तरह के हैंडवाश हैं, जिन्हें इस्तेमाल किया जा सकता है। क्योंकि साफव स्वच्छ हाथ ही आपको बीमारियों से बचा सकते हैं।

आत्मविश्वास बढ़ाना है तो इन बातों को हमेशा रखें ध्यान

आत्मविश्वास से भरा व्यक्ति न केवल सफलता के नए रास्ते खोज सकता है, बल्कि वह अपने निजी जीवन में भी ज्यादा खुश और स्वस्थ रहता है। शोधकर्ताओं ने लगातार आत्मविश्वास और सफलता के बीच एक संबंध पाया है। आत्मविश्वास से भरे लोगों को अधिक आकर्षक माना जाता है, ऐसे लोगों की डिमांड ज्यादा होती है और वे प्रोफेशनली बेहतर परफॉर्म कर पाते हैं। वे जीवन में जो कुछ भी करते हैं उनकी ज़िम्मेदारी ले पाने में सक्षम होते हैं और अधिक जोखिम भी उठा सकते हैं। यही वजह है कि वे स्वाभाविक रूप से बहुत से मौकों को अनलॉक कर पाते हैं। यदि आप इन विशेषताओं को खुद में भी देखना चाहती हैं, तो यहां जानें अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने के आसान उपाय।

1 एक दिलचस्प कहानी के साथ रहें तैयार- अगर आपके जीवन में बताने लायक कोई कहानी नहीं है, तो पढ़िए, देखिए, घूमिए। लोगों के बीच होने पर बहुत ज़रूरी है कि आपके पास कहने के लिए एक कहानी हो। लाइफ में अगर रोमांच या ड्रामे की कमी है, तो आपको नया क्या, आगे क्या जैसे आम सवालों के लिए तैयार होना चाहिए। आत्मविश्वास से भरे लोग कम्यूनिकेशन में शानदार होते हैं, लेकिन यह एक ऐसा कौशल है जिसे कुछ लोगों को दूसरों की तुलना में अधिक अभ्यास करने की आवश्यकता होती है।

2 जिज्ञासा प्रदर्शित करें-एक अच्छे कम्यूनिकेशन के साथ अपने आस-पास के लोगों में सच्ची दिलचस्पी दिखाने की कोशिश करें। लोगों को अपने बारे में बात करने के लिए यहां अच्छे प्रश्न दिए गए हैं- आपको सबसे ज्यादा क्या पसंद है? आप इस समय किससे जूझ रहे हैं? आगे क्या होगा? आपको इन प्रश्नों का उत्तर स्वयं देने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। ऐसा करने से आपको एक अच्छी कहानी बताने के लिए तैयार होने में मदद मिलेगी। **3 अपना पोश्चर सुधारें-**चलते, उठते, बैठते हुए झुके नहीं। हमेशा झुके रहना बताता है कि आप में आत्मविश्वास की कमी है। यदि आपको लगता है कि आप अपने आप झुक जाती हैं तो कंप्यूटर डिस्प्ले के किनारे रिमाइंडर के साथ एक नोट लगाएं। जब भी उस पर नज़र जाए सीधे बैठ जाएं। अपने पोश्चर को ठीक करने के लिए, अपने कंधों को स्ट्रेच करें और सीधा करें। फिर अपने ऊपर एक स्ट्रिंग खींचने की कल्पना करें। अपनी रीढ़ सीधी करें और अपनी ठुड्डी को ऊपर उठाएं ताकि एक सही पोजीशन मिल सके।

4 सेल्फ डाउट से उबरें - कम आत्मविश्वास वाले लोग अक्सर कमिटेड नहीं होते और लगातार खुद से सवाल पूछते हैं कि उनमें सबसे अच्छा क्या है? क्या मुझमें आत्मविश्वास है? क्या सबको लगता है कि मैं स्मार्ट हूं?अगर ऐसे प्रश्न आपके दिमाग में भी कौंधते हैं, तो बेहतर है कि इनकी पोटली बना कर कहीं फेंक दें। ऐसे प्रश्न आपके आत्मविश्वास में सेंध लगाने का काम करते हैं।

5 मुस्कुराहट संक्रामक है-जरा सोचिए, हंसते मुस्कुराते चेहरे किसे अच्छे नहीं लगते। खुश चेहरा न सिर्फ दूसरों को आकर्षित करते हैं, बल्कि आपके आत्मविश्वास में भी इजाफा करते हैं। आप यदि खुश रहेंगे तो आपके आसपास के लोग भी खुश रहेंगे, कई अध्ययनों में पाया गया है। कि ऐसे व्यक्ति को लोग पसंद करते हैं जिनका सेन्स ऑफ ह्यूमर अच्छा है या जो हंसते मुस्कुराते रहते हैं, जीवन से भरपूर हैं। इन बातों का ध्यान रख कर आपका कॉन्फिडेंस बढ़ता है।

स्मोकिंग का स्वैग बन सकता है-मुंह के कैंसर का कारण

कैंसर के कई कारण हो सकते हैं, और मुंह का कैंसर खराब जीवनशैली की वजह से हो सकता है। जानिए यह आपके लिए कितना घातक हो सकता है।मुंह का कैंसर एक जानलेवा बीमारी है। ये भारत में सबसे आम कैंसर में से एक हैं। GLOBOCAN के आंकड़ों के अनुसार, होंठ और मुंह के कैंसर 10.3 प्रतिशत और कैंसर से संबंधित मौतों का 8.8 प्रतिशत है। इसका मतलब यह है कि भारत में हर साल 135,000 हजार लोगों मुंह के कैंसर से पीड़ित होते हैं, और लगभग 75,000 लोग इससे जान गवा बैठते हैं। जीभ के कैंसर, बुक्कल म्यूकोसा (गाल की अंदर की सतह), ऊपरी एल्वियोलस (ऊपरी जबड़ा), निचला एल्वियोलस (निचला जबड़ा), तालु और मुंह के तल सभी ओरल कैंसर हैं।

जानिए मुंह के कैंसर का क्या है कारण-तंबाकू का सेवन ओरल कैविटी कैंसर का प्रमुख कारण है। चौंकाने वाली बात यह है कि गुटखा, खैनी, सुपारी (पान) और अन्य धुंआ रहित तंबाकू का उपयोग भारत की 21.4 प्रतिशत आबादी द्वारा किया जाता है। शराब पीने से कुछ कैंसर होने की संभावना बढ़ जाती है। तंबाकू के उपयोग से मुंह होने का खतरा तीस गुना बढ़ जाता है। कैंसर पान में सुपारी (सुपारी के रूप में भी जाना जाता है) से होता है, जो एक कैंसर पैदा करने वाला घटक है।

मुंह के कैंसर के लक्षण-अधिकांश रोगियों का धूम्रपान का इतिहास है। जीभ या गाल पर घाव होंना, कैविटी में वृद्धि, दांतों का ढीला होना, मुंह का कम खुलना और गर्दन की सूजन।ल्यूकोप्लाकिया, एरिथ्रोप्लाकिया, या सब-म्यूकोस फाइब्रोसिस जैसे कैंसर से पहले के रोग सभी मुंह के कैंसर के लक्षण हो सकते हैं। ल्यूकोप्लाकिया ओरल कैविटी में एक सफेद स्थान है जिसका कोई ज्ञात कारण नहीं है। एरिथ्रोप्लाकिया एक लाल रंग का क्षेत्र है जो एरिथ्रोप्लाकिया के समान दिखता है।सबम्यूकोस फाइब्रोसिस गाल के नीचे सफेद बैंड की तरह है जो मसालेदार भोजन के प्रति अधिक संवेदनशीलता और मुंह खोलने में धीरे-धीरे कमी से जुड़ा हुआ है। यदि कोई रोगी जल्दी चिकित्सा सहायता लेता है और धूम्रपान से दूर रहता है, तो इन घावों के कैंसर में बदलने का जोखिम कम हो जाता है।

कैसे पता करें कि आपको मुंह का कैंसर है?जब इस प्रकार के कैंसर का रोगी कैंसर केंद्र का दौरा करता है, तो ऊपरी वायु-पाचन पथ की पूरी जांच की जाती है, साथ ही गर्दन की जांच की जाती है, ताकि गर्दन में फैले अतिरिक्त घावों या बीमारी का पता लगाया जा सके।एक बायोप्सी को संदिग्ध कैंसर स्थान से निकाला जाता है और विश्लेषण के लिए प्रयोगशाला में भेजा जाता है। जहां कैंसर की हिस्टोपैथोलॉजिकल पुष्टि प्राप्त की जाती है। किसी भी गर्दन की सूजन का परीक्षण एफएनएसी (फाइन नीडल एस्पिरेशन साइटोलॉजी) से किया जा सकता है ताकि यह देखा जा सके कि कैंसर कोशिकाएं मौजूद हैं या नहीं। कभी-कभी, कैंसर फैलने की डिग्री निर्धारित करने और भविष्य की चिकित्सा की योजना बनाने के लिए सीटी स्कैन या एमआरआई स्कैन जैसे रेडियोलॉजिकल परीक्षण आवश्यक होते हैं। फेफड़ों में ट्यूमर के फैलने का पता लगाने के लिए छाती का एक्स-रे या सीटी स्कैन भी किया जाता है।

मुंह के कैंसर का इलाज-बीमारी का चरण निर्धारित करता है कि इन घावों का इलाज कैसे किया जाता है। स्टेज 1 और 2 घावों का इलाज एक ही तरीके से किया जा सकता है, जैसे कि सर्जरी या रेडिएशान। इन घावों के लिए सर्जरी का समर्थन किया जाता है क्योंकि वे आसानी से सुलभ होते हैं और केवल एक ही उपचार की आवश्यकता होती है। कुछ परिस्थितियों में, ब्रैकीथेरेपी (एक प्रकार का विकिरण) नियोजित किया जा सकता है। स्टेज III/IV घावों के लिए एक बहु-मोडल दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जिसमें सर्जरी, रेडिएशान या कीमोथेरेपी शामिल होती है।

मुंह के कैंसर के इलाज के बाद रीहैबिलेशन-ओरल कैंसर थेरेपी में एक महत्वपूर्ण मात्रा में रीहैबिलेशन शामिल है। जीभ, गाल या जबड़े के एक हिस्से को हटाने वाली सर्जरी के बाद बोलने और निगलने में अक्षमता वाले रोगी उभर कर सामने आते हैं। रेडिएशन और कीमोथेरेपी जैसी नॉन-सर्जिकल थैरेपी के बाद भी मरीजों को खाने और बोलने में काफी दिक्कत होती है। रोगी को इन कार्यों को फिर से करने में सहायता के लिए, रीहैबिलेशन प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है। निगलने को आसान बनाने के लिए भाषण और निगलने वाले चिकित्सक द्वारा विभिन्न निगलने वाले मूवमेंट सिखाये जाते हैं। उपचार के बाद रोगी को अधिक स्पष्ट रूप से कैसे बोलना है, यह शिक्षित करने के लिए स्पीच थेरेपी भी दी जाती है।

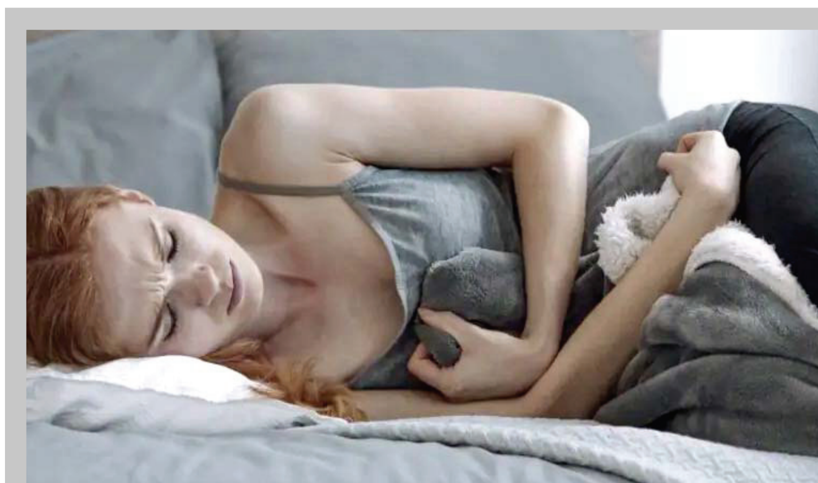

अबॉर्शन के बाद आपको सबसे ज्यादा अपना ख्याल रखना है

जब आप किसी बच्चे को जन्म देती हैं, तब इसे आपका नया जन्म माना जाता है। पर अबॉर्शन भी आपके शरीर और भावनाओं को कमजोर कर देनी वाली प्रक्रिया है।अमेरिका में लगभग आधी से ज़्यादा प्रेगनेंसीज़ अनवांटेड होती हैं। गर्भावस्था का दर अधिक होने के साथ, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि चार में से एक महिला का 45 वर्ष की आयु तक गर्भपात हो जाता है। द गुट्टमाकर इंस्टीट्यूट द्वारा 2026 के एक अध्ययन में पाया गया कि यू.एस.ए. में, 18% गर्भधारण में आगे चलकर अबॉर्शन होता है। ज़्यादातर अनवांटेड प्रेगनेंसीज़ के केस में यह होता है कि आपको पता चलता है कि आप गर्भवती हैं और आपको इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं होती है।ऐसे में जब आपको अचानक से पता चलता है तो आपके मन में कई तरह के ख्याल आना लाज़मी है। कि अबॉर्शन कराना सेफ है या नहीं? इसे करने के बाद आगे चलकर प्रेगनेंसी में कोई समस्या तो नहीं आएगी?हमें सबसे ज़्यादा डर इस बात का लगता है कि अबॉर्शन कराने के बाद क्या होगा। क्योंकि यह हर महिला के लिए एक कठिन निर्णय होता है। इसलिए आपकी शंकाओं को दूर करने क लिए हमने बात की प्रसूति और स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉक्टर ऋतु सेठी से।

तो अबॉर्शन के बाद आपको किस तरह के लक्षणों का सामना करना पड़ता है-कई महिलाओं को गर्भपात के बाद पहले कुछ दिनों में रक्तस्राव और ऐंठन का अनुभव होता है। यह सामान्य है क्योंकि आपका गर्भाशय गर्भावस्था से पहले के आकार में वापस आ जाता है। हल्का रक्तस्राव या स्पॉटिंग छह सप्ताह तक रह सकता है, लेकिन कुछ महिलाओं को बिल्कुल भी रक्तस्राव का अनुभव नहीं होता है।गर्भपात के बाद, आपके हार्मोन को गर्भावस्था से पहले के स्तर पर स्थिर होने के लिए समय चाहिए।

हिमाचल के निगुलसरी-नापथा में 8 घंटे बंद रहेगा एनएच-5

मानसून से पहले अलर्ट, मरम्मत का काम शुरू होगा; टूरिस्ट-लोकल को एडवाइजरी जारी

रामपुर।

हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले को जोड़ने वाला शिमला-किन्नौर नेशनल हाईवे-5 30 जुलाई तक आठ घंटे वाहनों के लिए बंद रहेगा। किन्नौर जिला प्रशासन ने मानसून के दौरान भूस्खलन के खतरे को कम करने के लिए निगुलसरी-नाथपा में खतरनाक पत्थरों को हटाने और सड़क मरम्मत का निर्णय लिया है। इसे देखते हुए 8 जून से 30 जुलाई तक व्यवस्था लागू रहेगी। इससे स्थानीय लोगों के साथ-साथ देशभर से किन्नौर के विभिन्न पर्यटन स्थलों पर पहुंचने वाले पर्यटकों को भी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि सांगला, कल्पा और छितकुल जैसे पर्यटन स्थलों पर रोजाना बड़ी संख्या में पर्यटक पहुंच रहे हैं। ऐसे में दिन के समय किन्नौर की यात्रा पर्यटकों के लिए असुविधाजनक हो सकती है। हालांकि राहत की बात यह है कि सड़क पूरी तरह बंद नहीं रहेगी। वाहनों पर रोक अस्थायी होगी। पुलिस अधीक्षक किन्नौर कार्यालय द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार, निगुलसरी के पास 316/880 से 317/250 किलोमीटर तक तथा नाथपा में 330/350 से 330/560 किलोमीटर तक यातायात रोका जाएगा।

संसदीय समिति ने एनटीए से पूछा-पेपर लीक की क्या परिभाषा

सीबीएसई से ओएसएम को लेकर सवाल- ठेका देने से पहले कंपनी का बैकग्राउंड जांचा था

नई दिल्ली।

नीट पेपर लीक और सीबीएसई के ऑन-स्क्रीन मार्किंग सिस्टम से जुड़े विवादों की जांच कर रही संसदीय समिति ने राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) और सीबीएसई से कई तीखे सवाल पूछे। साथ ही दोनों संस्थानों को तलब कर लिखित जवाब मांगे हैं। कांग्रेस सांसद दिग्विजय सिंह की अध्यक्षता वाली समिति ने एनटीए से पूछा कि उसकी नजर में 'पेपर लीक' की परिभाषा क्या है, जबकि सीबीएसई से पूछा कि क्या ओएसएम का ठेका देने से पहले कोएम्प्ट कंपनी के बैकग्राउंड जांच की थी? समिति ने एनटीए से पूछा, '2018 से अब तक उसके द्वारा आयोजित परीक्षाओं में क्या कभी पेपर लीक हुआ?' हाल ही में एनटीए अधिकारियों ने दावा किया था कि उनके सिस्टम से कोई पेपर लीक नहीं हुआ, बल्कि केवल एक गेस पेपर प्रसारित हुआ था। समिति ने एनटीए के आंतरिक ढांचे और मैनपावर पर पूरा ब्योरा मांगा है। एजेंसी से पिछले तीन साल के दौरान काम कर रहे कुल कर्मियों की संख्या की डिटेल और 2022 से अब तक विभाग में की गई सभी नई नियुक्तियों की जानकारी देने के लिए कहा गया।

अभिजीत दीपके बोले- कॉकरोच जनता पार्टी देशभर में प्रदर्शन करेगी

खुद अलग-अलग राज्यों और शहरों में जाऊंगा

नई दिल्ली।

कॉकरोच जनता पार्टी के फाउंडर अभिजीत दीपके ने देशभर में प्रदर्शन का ऐलान किया है। उन्होंने रविवार रात सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक वीडियो मैसेज जारी कर कहा- अगर 13 जून तक शिक्षा मंत्री इस्तीफा नहीं देते हैं तो मैं खुद अलग-अलग राज्यों और शहरों में प्रदर्शन के लिए जाऊंगा। उन्होंने कहा कि अगर इसके बाद भी शिक्षा मंत्री ने इस्तीफा नहीं दिया तो देशभर के छात्र फिर से दिल्ली जाएंगे और शांतिपूर्ण आंदोलन करेंगे। सीजेपी ने 6 जून को जंतर-मंतर पर भी प्रदर्शन किया था और परीक्षाओं में गड़बड़ियों को लेकर शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग की थी। अभिजीत 6 जून को प्रदर्शन के लिए अमेरिका से भारत आए हैं। वे रविवार सुबह महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर स्थित अपने घर पहुंचे। उन्होंने शाम को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की और कहा- पिछले 10-12 साल में देश की राजनीति हिंदू-मुस्लिम मुद्दों पर केंद्रित रही है। इससे रोजगार नहीं मिलेगा।

मणिपुर के उखरुल में असम राइफल्स का विरोध, बंकर तोड़ा

जवानों का दावा- महिलाओं ने उन पर पेट्रोल डाला; झड़प में 22 तंगखुल महिलाएं घायल

उखरुल।

मणिपुर के उखरुल जिले के शोक्काओ और न्यू हेवन इलाके में रविवार सुबह सैकड़ों महिलाएं असम राइफल्स के जवानों और वाहनों के आगे दीवार बनकर खड़ी हो गईं। मशालें, लाठियां लिए ये तंगखुल नगा महिलाएं जवानों को आगे नहीं बढ़ने दे रही थीं। सैन्य अधिकारियों ने चेतावनी दी। इसके बावजूद वे डटी रहीं और 'हमारी जमीन, हमारा अधिकार' नारे लगाती रहीं। स्थानीय लोगों के मुताबिक, जवानों ने पुलिस और मजिस्ट्रेट की गैरमौजूदगी में कई राउंड हवाई फायर किए और लाठीचार्ज किया। प्रदर्शन कर रही महिलाओं से धक्का-मुक्की भी की गई। हालांकि सोशल मीडिया पर सामने आए एक वीडियो में जवानों ने यह दावा किया है कि विरोध कर रही महिलाओं ने उन पर पेट्रोल डालकर जलाने की कोशिश की। रिपोर्ट्स में एक प्रदर्शनकारी के पैर पर गोली लगने का दावा किया गया। वहीं, 22 महिलाएं घायल हो गईं। इन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूत्रों के मुताबिक, शोक्काओ गांव की महिलाओं ने न्यू हेवन की ओर बढ़ रहे काफिले को शनिवार देर रात ही रोक लिया था।

बीज निगम डायरेक्टर और भांजे समेत 6 रिमांड पर, पांच दिन होगी पूछताछ

बीकानेर।

नकली मूंगफली बीज घोटाले के मामले में बीज निगम के नामित निदेशक जुगल किशोर समेत 6 आरोपियों को बीकानेर एसीबी स्पेशल कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने सभी आरोपियों को पांच दिन की रिमांड पर भेज दिया है।

नकली बीज की शिकायत के बाद कृषि विभाग ने 27 मई को जोधपुर में गोदाम में सर्च कर 15 करोड़ रुपए के बीज सीज किए गए थे। इसके बाद सैंपल पास कराने, कार्रवाई नहीं करने और बीज को वापस गुजरात भेजने को लेकर रिश्वत का खेल शुरू हुआ था। एसीबी को इनपुट मिला था कि बीज निगम के नामित निदेशक तक पहले ही 2 करोड़ रुपए पहुंच चुके हैं। नकली बीज मामले में गुजरात की कंपनी से सांठगांठ की जा रही है।

बता दें, 7 जून को लूणकरणसर (बीकानेर) में एक निजी बस से 85 लाख रुपए नकद के साथ स्वतंत्र ज्याणी को पकड़ा गया था। रकम बीज निगम के नामित निदेशक के श्रीगंगानगर स्थित ठिकाने पर पहुंचाई जानी थी। इसके बाद एसीबी ने बीकानेर में जयपुर रोड स्थित नामित निदेशक जुगल किशोर के घर पर छापा मारा, जहां से 1 करोड़ 58 लाख रुपए नकद बरामद किए गए। कार्रवाई के दौरान जुगल किशोर, किरण कापड़िया, गणपत बिश्नोई, सतपाल सिंह और सुनील सेठिया को भी अलग-अलग जगह गिरफ्तार किया गया था। अब तक 2 करोड़ 44 लाख रुपए नकद बरामद किए जा चुके हैं।

राज्यसभा चुनाव : सतीश पूनिया और अलका गुर्जर ने भरा नामांकन

लोक टुडे। जयपुर

भारतीय जनता पार्टी के राज्यसभा उम्मीदवार डॉ. सतीश पूनिया और डॉ. अलका गुर्जर ने सोमवार को राज्यसभा चुनाव के लिए अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा सहित पार्टी के कई मंत्री, विधायक और वरिष्ठ पदाधिकारी मौजूद रहे। नामांकन से पूर्व भाजपा प्रदेश मुख्यालय में दोनों उम्मीदवारों का स्वागत एवं सम्मान समारोह भी आयोजित किया गया।

नामांकन के बाद डॉ. सतीश पूनिया ने पार्टी नेतृत्व का आभार जताते हुए कहा कि भाजपा ने एक साधारण कार्यकर्ता पर भरोसा जताकर उसे देश की सर्वोच्च लोकतांत्रिक संस्थाओं में प्रतिनिधित्व का अवसर दिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा में कार्यकर्ता ही संगठन की सबसे बड़ी ताकत हैं और पार्टी हमेशा समर्पण, मेहनत तथा संगठन के प्रति निष्ठा का सम्मान करती है। पूनिया ने कहा कि राज्यसभा में पहुंचने के बाद वे राजस्थान के हितों, किसानों, युवाओं, महिलाओं और प्रदेश के विकास से जुड़े मुद्दों को मजबूती से उठाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है और वे उसी सोच को आगे बढ़ाने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेंगे। पार्टी नेतृत्व द्वारा जताए गए विश्वास को पूरी निष्ठा, ईमानदारी और समर्पण के साथ निभाने का प्रयास करेंगे। वहीं राज्यसभा उम्मीदवार डॉ. अलका गुर्जर ने कहा कि भाजपा ने उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी है, वह केवल व्यक्तिगत सम्मान नहीं बल्कि महिलाओं, वंचित वर्गों और संगठन के लाखों कार्यकर्ताओं का सम्मान है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने हमेशा महिलाओं को नेतृत्व और प्रतिनिधित्व के अवसर दिए हैं तथा राज्यसभा में पहुंचकर वे महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक विकास से जुड़े विषयों को प्रमुखता से उठाएंगी।

डॉ. अलका गुर्जर ने कहा कि महिला को राज्यसभा का उम्मीदवार बनाकर भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम की भावना को आगे बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि महिला सुरक्षा उनके लिए प्राथमिक मुद्दा रहेगा और देश के सर्वोच्च सदन में इस विषय को प्रभावी ढंग से उठाया जाएगा। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार महिलाओं के सशक्तिकरण और सुरक्षा के लिए लगातार कार्य कर रही है।

गुर्जर समाज से जुड़े मुद्दों पर उन्होंने कहा कि भाजपा ने हमेशा समाज के हितों में काम किया है। नामांकन से पूर्व भाजपा मुख्यालय में बड़ी संख्या में गुर्जर समाज की महिलाएं भी पहुंचीं। महिलाओं ने पारंपरिक नृत्य और गीतों के माध्यम से डॉ. अलका गुर्जर को राज्यसभा उम्मीदवार बनाए जाने पर खुशी व्यक्त की और जश्न मनाया।

मेरी मिलीभगत मिले तो गिरफ्तारी देने को तैयार : किरोड़ी

मंत्री पद भी छोड़ दूंगा, रीट-आरएएस में डोटासरा पर आरोप लगाए थे, इसलिए दुर्भावना से आरोप लगा रहे

जयपुर। बीज निगम के नामित निदेशक की गिरफ्तारी को लेकर कृषि मंत्री किरोड़ीलाल मीणा ने कहा कि मैं तो जीवनभर भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ा हूं। इस मामले में मेरी तिल भर भी मिलीभगत मिल जाए तो मैं अपने आप को कानून के हवाले करने को तैयार हूं। गिरफ्तारी ही नहीं, मैं मंत्री पद भी छोड़ने को तैयार हूं। उन्होने कहा- इस मामले में मेरी छवि खराब करने की कोशिश की जा रही है। पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा के पास प्रमाण हैं तो वह एसीबी को दें, जिससे मेरे खिलाफ कार्रवाई हो सके। क्योंकि मैंने रीट और आरएएस के पेपर में डोटासरा के खिलाफ आरोप लगाए थे। इसलिए वह दुर्भावना से ग्रसित होकर मेरे खिलाफ आरोप लगा रहे हैं। किरोड़ी ने कहा- यह सभी माफिया कांग्रेस के राज में पनपे थे। हम इन सभी की कमर तोड़ेंगे। किरोड़ी ने यह बातें सोमवार को विधानसभा के बाहर मीडिया से बात करते हुए कहीं।

रिफाइनरी को मिलेगी रेल रफ्तार, 11 किमी नई रेल लाइन का फाइनल सर्वे पूरा

बालोतरा से पचपदरा रिफाइनरी तक पुरानी ट्रैक के अलाइनमेंट पर बिछेगी नई लाइन, व्यापार और रोजगार को मिलेंगे नए पंख

लोक टुडे। बालोतरा

राजस्थान के सबसे महत्वपूर्ण औद्योगिक प्रोजेक्ट्स में से एक पचपदरा रिफाइनरी को जल्द ही भारतीय रेलवे नेटवर्क की बड़ी सौगात मिलने वाली है। बालोतरा से पचपदरा रिफाइनरी तक प्रस्तावित 11 किलोमीटर लंबी नई रेल लाइन का फाइनल लोकेशन सर्वे का काम लगभग पूरा हो चुका है। उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक अमिताभ ने हाल ही में बालोतरा स्टेशन और रिफाइनरी कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट का जमीनी निरीक्षण कर इसकी पुष्टि की है। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव द्वारा इस महत्वपूर्ण रेल परियोजना के फाइनल लोकेशन सर्वे के लिए बजट पहले ही स्वीकृत किया जा चुका है। सर्वे का काम पूरा होने के बाद अब रेलवे विभाग आगामी एक से दो हफ्तों में रिफाइनरी से संभावित ट्रैफिक और रेट ऑफ रिटर्न से जुड़े डेटा को संकलित कर अंतिम प्रस्ताव रेल मंत्रालय को भेजेगा।

पुरानी अलाइनमेंट पर ही बनेगी नई लाइन -

रेलवे अधिकारियों के अनुसार यह नई रेल लाइन बालोतरा से पुराने मीटर गेज के ट्रैक अलाइनमेंट के आधार पर ही पचपदरा तक बिछाई जाएगी। इसके लिए अलग से बड़े पैमाने पर भूमि अधिग्रहण की जटिलताओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। रेलवे महाप्रबंधक ने रिफाइनरी के उच्चाधिकारियों के साथ बैठक कर भविष्य में उत्पादित होने वाले पेट्रोलियम पदार्थों, उप-उत्पादों और रेलवे पर लोड होने वाले कुल माल की मात्रा पर विस्तृत चर्चा की है। रिफाइनरी को लंबे समय तक सुचारू रखने के लिए इस डायरेक्ट रेल मार्ग का निर्माण बेहद आवश्यक माना जा रहा है।

दिल्ली, जयपुर और अहमदाबाद से मजबूत होगी कनेक्टिविटी -

इस 11 किलोमीटर के ट्रैक के बिछने से पचपदरा रिफाइनरी सीधे देश के मुख्य रेलवे नेटवर्क से जुड़ जाएगी। इससे बाड़मेर और बालोतरा के साथ-साथ जोधपुर, जयपुर, दिल्ली और अहमदाबाद जैसे प्रमुख वाणिज्यिक शहरों के लिए मालगाड़ियों और यात्री ट्रेनों का संचालन आसान हो जाएगा।

ऑपरेशन सिंदूर के पायलट मनीष अरोड़ा को वीर चक्र

3 आतंकी ढेर करने वाले कर्नल को शौर्य चक्र मिला, राष्ट्रपति ने जवानों को सम्मानित किया

नई दिल्ली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोमवार को राष्ट्रपति भवन में रक्षा अलंकरण समारोह में 7 कीर्ति चक्र, 15 वीर चक्र और 29 शौर्य चक्र प्रदान किए। सम्मान पाने वालों में ऑपरेशन सिंदूर में शामिल भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन मनीष अरोड़ा भी रहे, जिन्हें वीर चक्र से सम्मानित किया गया। वहीं, एलओसी पर 3 आतंकियों को मार गिराने वाले लेफ्टिनेंट कर्नल नितेश भारती शुक्ला भी शामिल है। इसके अलवा अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती इलाके में सैन्य अभियान के दौरान बहादुरी दिखाने वाले मेजर आदित्य प्रताप सिंह को भी शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया। छत्तीसगढ़ में नक्सल विरोधी अभियान के दौरान साहस दिखाने वाले पुलिस अधिकारी लक्ष्मण केवट और रामेश्वर प्रसाद देशमुख को भी यह सम्मान मिला। समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी मौजूद रहे।

पश्चिम एशिया के वर्तमान हालात अत्यंत चिंता का विषय: भारत

नई दिल्ली

भारत ने सोमवार को पश्चिम एशिया में फिर से बढ़ते हमलों पर गहरा खेद जताया और सभी पक्षों से तनाव कम करने की अपील की। विदेश मंत्रालय ने कहा कि यह घटनाक्रम अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए अत्यंत चिंता का विषय है। मंत्रालय के बयान में कहा गया, भारत पश्चिम एशिया में फिर से हुए हमलों पर गहरा खेद व्यक्त करता है। ये घटनाक्रम अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए अत्यंत चिंता का विषय हैं। यह संघर्ष अब 100 दिनों से अधिक समय से जारी है और इससे भारी मानवीय पीड़ा हुई है। इसका वैश्विक अर्थव्यवस्था और ऊर्जा आपूर्ति पर भी गंभीर प्रभाव पड़ा है। बयान में आगे कहा गया, हम सभी पक्षों से अपील करते हैं कि वे तुरंत तनाव कम करें, यह सुनिश्चित करें कि नागरिकों को कोई नुकसान न हो, और कूटनीतिक समाधान के लिए चल रही वार्ताओं को पूरा करें ताकि क्षेत्र में शांति और स्थिरता लौट सके।

चांदी 12,608 गिरकर 2.41 लाख किलो पर आई : 8 दिन में 22 हजार की गिरावट

सोना 2749 टूटा, 10 ग्राम की कीमत 1.51 लाख

नई दिल्ली। मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव की वजह से आज यानी 8 जून को सोने-चांदी के दाम में गिरावट रही। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के अनुसार, 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का दाम आज 2,749 रुपए गिरकर 1.51 लाख रुपए हो गया है। वहीं, 1 किलो चांदी की कीमत 12,608 रुपए कम होकर 2.44 लाख रुपए पर आ गई है। 31 मई को चांदी की कीमत 2,63,350 रुपए थी। एक्सपर्ट्स के अनुसार जियो पॉलिटिकल टेंशन के चलते लोग मार्केट से पैसा निकालकर अपने पास कैश रख रहे हैं।

ऑलटाइम हाई से 1.45 लाख रुपए गिरी चांदी

इस साल सोने-चांदी की कीमत में लगातार उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। 31 दिसंबर 2025 को सोने के दाम 1.33 लाख रुपए थे, जो 29 जनवरी को बढ़कर 1.76 लाख रुपए के सबसे ऊपरी स्तर पर पहुंच गए थे। तब से अब तक सोना 25 हजार रुपए सस्ता हो चुका है। वहीं, चांदी के कीमत 31 दिसंबर 2025 को 2.30 लाख रुपए थी, जो 29 जनवरी को 3.86 लाख रुपए के ऑलटाइम हाई पर पहुंच गई थी। तब से अब तक 130 दिन में चांदी 1.42 लाख रुपए सस्ती हो गई है। वहीं चांदी इस महीने सिर्फ 8 दिन में ही 19 हजार रुपए गिर चुकी है।

विशाखापट्टनम स्टील प्लांट में हादसा, 8 मजदूरों की मौत

1600 डिग्री पर पिघला गर्म लोहा क्रेन से ले जा रहे थे, बैलेंस बिगड़ने से उन पर ही गिरा

विशाखापट्टनम।

आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम स्थित स्टील प्लांट में सोमवार को बड़ा हादसा हो गया। प्लांट में करीब 1600एष्ट तापमान वाला पिघला हुआ लोहा (मोल्टन आयरन) मजदूरों पर गिर गया। हादसे में 8 मजदूरों की मौत हो गई, जबकि कई अन्य घायल हो गए। सभी घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के मुताबिक, प्लांट में क्रेन की मदद से एक बड़े बकेट में पिघला हुआ लोहा एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा रहा था। इसी दौरान बकेट का संतुलन बिगड़ गया और उसमें भरा गर्म लोहा नीचे काम कर रहे कर्मचारियों पर गिर गया।

हादसा राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के स्टील प्लांट में हुआ। हादसे के बाद प्लांट परिसर में अफरा-तफरी मच गई। राहत और बचाव दल ने तत्काल मौके पर पहुंचकर घायलों को बाहर निकाला और अस्पताल पहुंचाया। अधिकारियों ने कहा कि फिलहाल हादसे के कारणों की जांच की जा रही है। पता लगाया जा रहा है कि कही दुर्घटना की वजह तकनीकी खराबी या सुरक्षा मानकों में किसी तरह की चूक तो नहीं हुई। आंध्र प्रदेश की गृह मंत्री वंगालापुडी अनिता ने विशाखापट्टनम के कलेक्टर और सिटी पुलिस कमिश्नर से फोन पर बात कर हादसे की जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को घायलों को बेहतर इलाज दिलाने और रेस्क्यू ऑपरेशन तेज करने के निर्देश दिए।

राज्य के गृह मंत्री वंगलापुडी अनीता ने विशाखापत्तनम स्टील प्लांट में हुई दुर्घटना पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने विशाखापत्तनम के जिला कलेक्टर और शहर के पुलिस कमिश्नर से फोन पर बात की और स्टील प्लांट दुर्घटना से जुड़ी जानकारी ली।

खड़गे बोले- सीबीएसई-नीट गड़बड़ी पर शिक्षा मंत्री इस्तीफा दें

एसआईआर में करोड़ों वोटर के नाम काटे, इसके खिलाफ इंडिया ब्लॉक सीजेआई को लेटर लिखेगा

नई दिल्ली।

इंडिया ब्लॉक की 2 साल बाद हुई 7वीं बैठक में सोमवार को 25 दलों के नेता शामिल हुए। दिल्ली में हुई बैठक में सोनिया गांधी, राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, अखिलेश यादव, ममता बनर्जी, सुप्रिया सुले, कपिल सिब्बल समेत कई नेता मौजूद रहे। वहीं उद्धव ठाकरे और हेमंत सोरेन वर्चुअली जुड़े। मीटिंग के बाद कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा- 2 घंटे से ज्यादा चली बैठक में 5 मुद्दों पर सहमति बनी है। नीट में देश के युवाओं के साथ धोखा हुआ है। नीट और सीबीएसई की गड़बड़ी के लिए शिक्षा मंत्री जिम्मेदार हैं, वह तुरंत इस्तीफा दें। खड़गे ने कहा कि एसआईआर में करोड़ों वोटर के नाम कटे। एसआईआर और चुनाव की निष्पक्षता को लेकर सीजेआई को लेटर लिखेंगे। सरकार को महंगाई, बेरोजगारी और अर्थव्यवस्था के मुद्दे पर सर्वदलीय बैठक बुलानी चाहिए। गठबंधन हर 2 महीने में और मानसून सत्र के दौरान भी बैठक करेगा। अगली बैठक 8 अगस्त को हैदराबाद में होगी।

यूथ कांग्रेस ने कांग्रेस-राहुल के खिलाफ लगे पोस्टर फाड़े-दिल्ली की अकबर रोड पर सोमवार सुबह कुछ पोस्टर लगाए गए थे। हालांकि पोस्टर किसने

बर्फीले ग्लेशियर जैसे जटिल क्षेत्रों में पहुंचे रक्षा सचिव, जवानों का बढ़ाया हौसला

नई दिल्ली

सैन्य तैयारियों का जायजा लेने के लिए रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह बर्फीले ग्लेशियर जैसे जटिल क्षेत्रों में पहुंचे, जहां उन्होंने लद्दाख के लेह सेक्टर का दौरा किया है। सीमावर्ती क्षेत्रों में उन्होंने सैन्य तैयारियों, सीमा अवसंरचना और रसद व्यवस्था की व्यापक समीक्षा की। इस दौरान रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह ने यहां मुख्यालय 14 कोर के वरिष्ठ सैन्य कमांडरों के साथ बैठक की। इस बैठक में क्षेत्र की सुरक्षा स्थिति और परिचालन तैयारियों का विस्तृत आकलन किया गया है। 5 से 7 जून तक रक्षा सचिव की यह तीन दिवसीय विजिट थी। इस दौरान रक्षा सचिव पूर्वी लद्दाख के कई अग्रिम क्षेत्रों तक पहुंचे। इनमें बेस कैंप और उत्तरी ग्लेशियर क्षेत्र शामिल रहे। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और अत्यधिक ऊंचाई वाले इलाकों में तैनात सैनिकों से उन्होंने सीधे बातचीत की तथा उनकी परिचालन तत्परता का जायजा लिया। रक्षा सचिव ने जवानों की प्रतिबद्धता, साहस और पेशेवर दक्षता की सराहना करते हुए कहा कि देश की सीमाओं की सुरक्षा में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में कर्तव्य निभा रहे सैनिकों के अदम्य साहस और समर्पण की प्रशंसा की। इस दौरान सीमावर्ती क्षेत्रों में विकसित की जा रही आधारभूत संरचनाओं, सैन्य रसद नेटवर्क और दीर्घकालिक परिचालन स्थिरता से जुड़े विभिन्न पहलुओं की भी समीक्षा की गई।

अधिकारियों ने उन्हें क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों और सुरक्षा संबंधी व्यवस्थाओं की जानकारी दी। यह दौरा ऐसे समय में हुआ है जब लद्दाख क्षेत्र देश की सबसे संवेदनशील और रणनीतिक सीमाओं में से एक बना हुआ है।

होर्मुज में जलते जहाज से 24 भारतीयों का रेस्क्यू

ईरान बोला- अब इजराइल पर हमले नहीं, भारत ने नागरिकों को ईरान छोड़ने को कहा

लोक टुडे। एजेंसी

होर्मुज स्ट्रेट के पास एक तेल टैंकर में आग लगने के बाद उस पर सवार 24 भारतीय नाविकों को इंडियन नेवी ने बचा लिया है। शुरुआती रिपोर्टों में जहाज पर हमले की आशंका जताई गई है, हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। इस बीच ईरान ने घोषणा की है कि उसने फिलहाल इजराइल के खिलाफ अपनी सैन्य कार्रवाई रोक दी है। हालांकि उसने चेतावनी दी कि अगर इजराइल ने फिर से लेबनान या अन्य जगहों पर हमला किया तो उसे पहले से ज्यादा सख्त जवाब दिया जाएगा।

दूसरी ओर अमेरिका युद्धविराम और शांति समझौते की कोशिशों में जुटा है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने दावा किया है कि इजराइल और ईरान दोनों संघर्ष रोकना चाहते हैं और अंतिम समझौते को लेकर बातचीत आगे बढ़ रही है। उन्होंने यह भी कहा कि समझौता होने तक ईरान पर लगी नाकाबंदी जारी रहेगी। हालात को देखते हुए भारत सरकार ने ईरान में मौजूद भारतीय नागरिकों को जल्द से जल्द वहां से निकलने की सलाह दी है। विदेश मंत्रालय ने कहा है कि क्षेत्र की सुरक्षा स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है और जरूरत पड़ने पर भारतीयों की मदद के लिए जरूरी कदम उठाए जाएंगे।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक संपादकः नीरज मेहरा द्वारा बोनस ग्राफिक्स, लक्ष्मी नगर, झोटवाड़ा मार्ग, अजमेर रोड़, जयपुर-302006 से मुद्रित एवं 141, दयानन्द नगर, फेज प्रथम झालाना डूंगरी गली नंबर 19, थाना गांधी नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रबंध संपादक- पी.के.बृजवाल, 9950325930, 9571635930 (कानूनी सलाहकार एडवोकेट कैलाशनाथ भट्ट)